



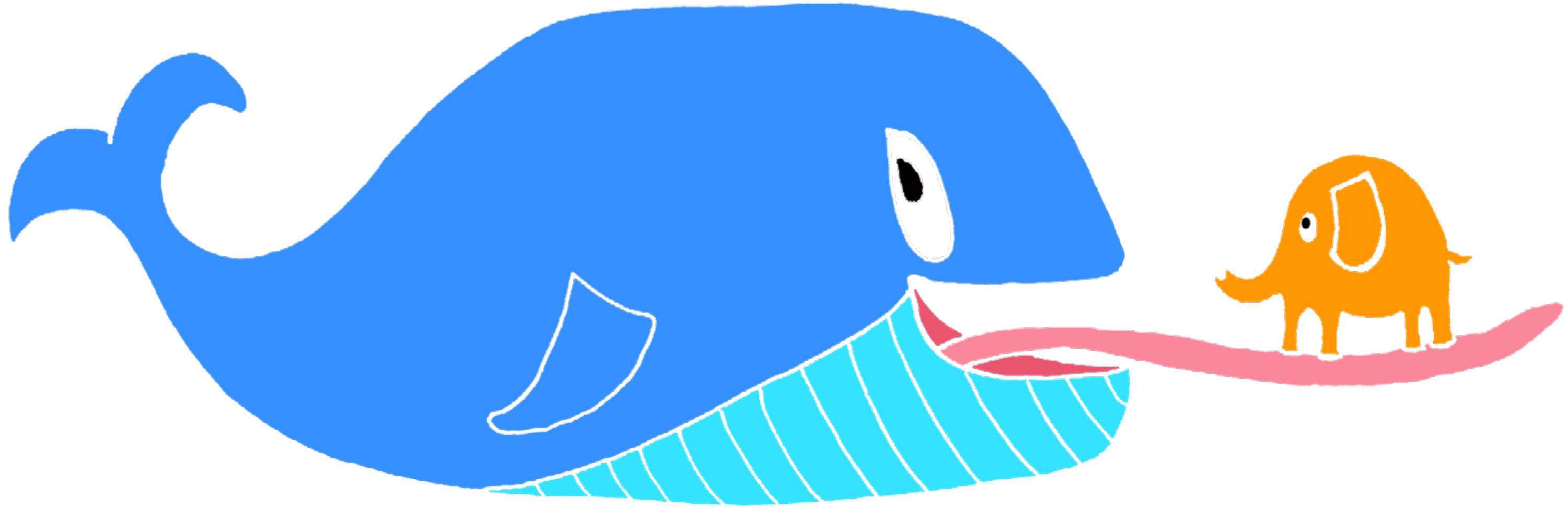
कमाल की जीभ!

डॉ एन कृष्णास्वामी
चित्रांकन: श्रेया कसत



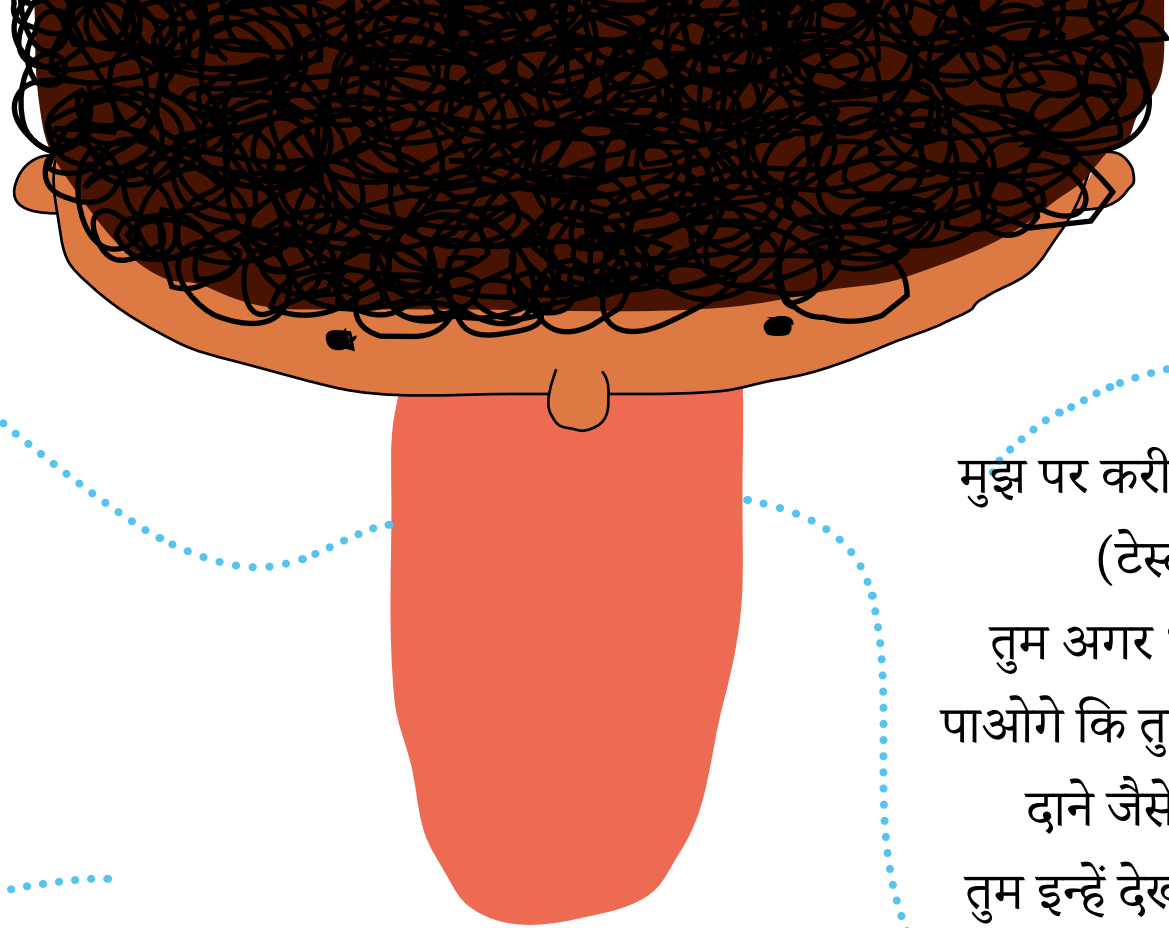
कथा की 300एम थिंकबुक





डॉक्टर बनना चाहोगे? आओ,
कुछ मज़ेदार बात बताती हूँ!

हमारा शरीर कमाल का है।
इसको कमाल बनाने वालों में से हूँ मैं!

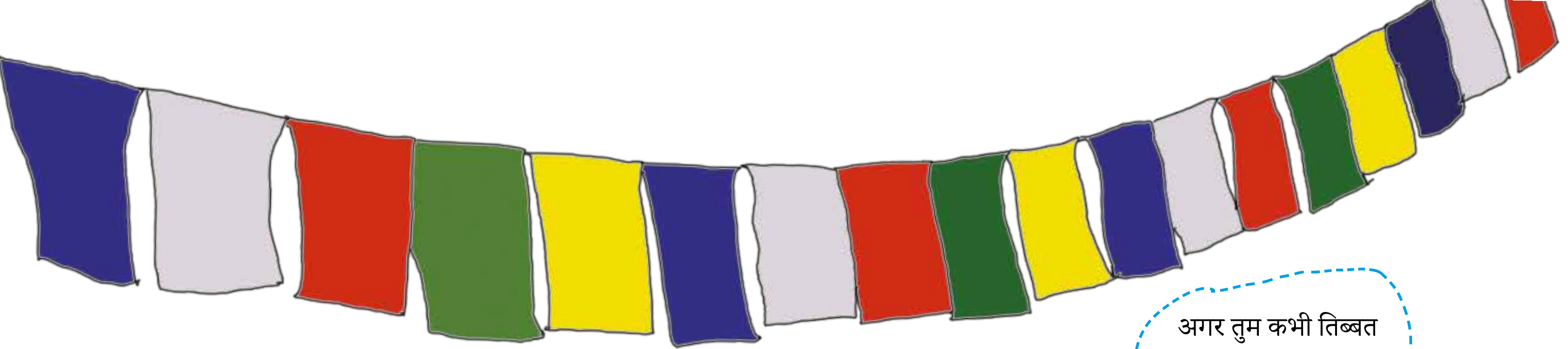


मैं पूरे शरीर में सबसे मज़बूत और लचीली मांसपेशी हूँ। और मैं अकेली ऐसी मांसपेशी हूँ जो केवल एक ही छोर से शरीर से जुड़ी है।

वैसे तो मैं सभी जानवरों में होती हूँ। पर तुम्हारे पास कुछ ऐसा है, जो और किसी जानवर में नहीं। कोई और जानवर तुम्हारी तरह खाने का स्वाद नहीं ले सकता।

मुझ पर करीब ८००० स्वाद कलिकाएं (टेस्ट बड्स) होती हैं। तुम अगर ध्यान से महसूस करो तो पाओगे कि तुम्हारी जीभ पर छोटे-छोटे, दाने जैसे आकार के उभार हैं। तुम इन्हें देख भी सकते हो। पर इनके ऊपर होती हैं तुम्हारी स्वाद-कलिकाएं, जिन्हें तुम देख नहीं सकते।

क्या तुम अंदाज़ा लगा पाए कि मैं कौन हूँ? **मैं तुम्हारी जीभ हूँ!** मैं अनूठी हूँ! ठीक तुम्हारे उँगलियों के निशान की तरह। मैं तुम्हारे शरीर में एक खास स्थान रखती हूँ। किसी और की जीभ तुम्हारे जैसी नहीं है।



खट्टा-मीठा, ठंडा-गरम
यह सब तुम्हें मेरे द्वारा ही पता चलता है।
कभी आइसक्रीम खानी हो, तो मेरे द्वारा ही तुम
उसका स्वाद ले पाते हो। तुम्हारे सूखे होठों को मैं
नमी दे सकती हूँ। और कभी तुम्हें सीटी बजानी
हो, तो वह भी मैं कर सकती हूँ!

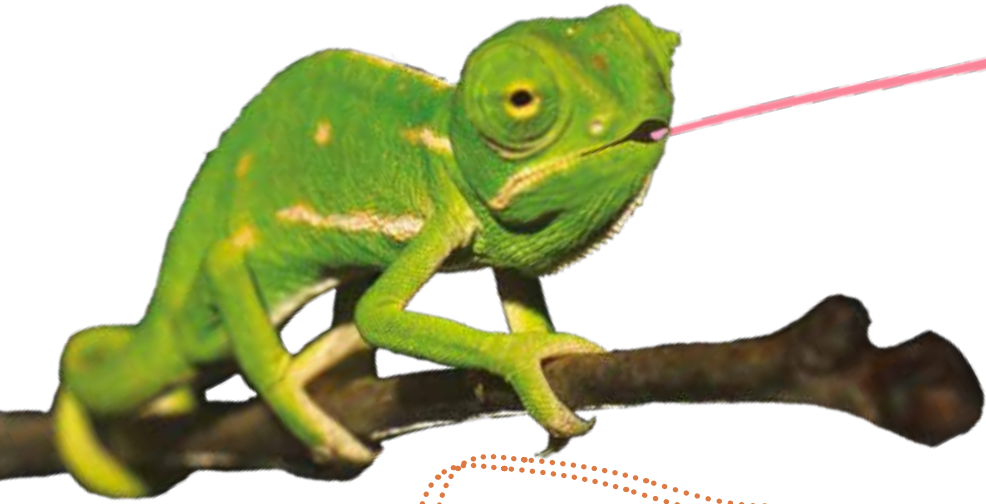
मैं तुम्हें खाने का स्वाद
लेने में मदद करती हूँ।
और बुरे स्वाद की पहचान
भी कराती हूँ!

मैं बोलने में तुम्हारी
मदद करती हूँ!

अगर तुम कभी तिब्बत
जाओ, तो अपने दोस्तों
को जीभ निकल कर
'हेलो' करना।



जीभ के बारे में कुछ अद्भुत बातें!
अरे, हाँ! जानवरों की जीभ भी कुछ
कमाल की चीज़ें कर लेती हैं!



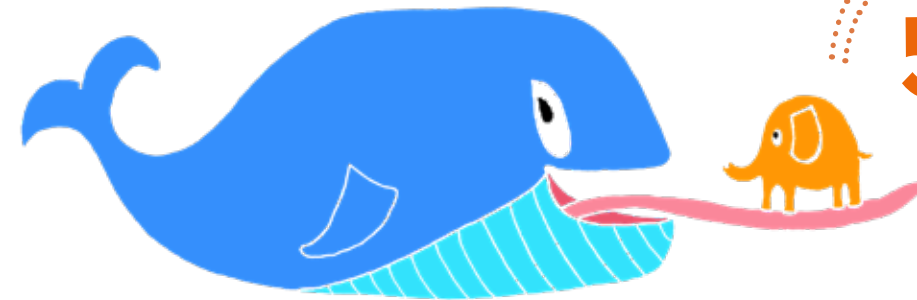
कुत्ते और बिल्लियाँ मेरा इस्तेमाल खुद को साफ़ रखने के लिए करते हैं। लेकिन गिरगिट, मेढक और चींटीखोर लिए मैं शिकार भी करती हूँ।

2 गिरगिट की जीभ उसके शरीर से दोगुनी लम्बी होती है।



3 जिराफ़ की जीभ ५३ सेंटीमीटर लम्बी होती है। इस पर ब्रश नुमा कांटे लगे होते हैं। इसी की मदद से जिराफ़ कांटेदार पत्ते खाते हैं।

4 कठफोड़वे की जीभ उसके सिर को चारों तरफ़ से लपेट सकती है। यह कंटिली और चिपचिपी होती है जिससे छोटे-छोटे बिल में से कीड़ों को निकाल सके।



5 एक ब्लू व्हेल की जीभ ५४०० पौंड की होती है। यह तो कुछ हाथियों से भी भारी है!

साफ़ जीभ की जांच!

शीशे के आगे खड़े हो जाओ! अपनी जीभ बाहर निकालो और देखो-अगर तुम्हारी जीभ सफ़ेद है, तो उस पर बैक्टीरिया हैं। तुम्हें दोबारा मंजन करने की ज़रूरत है। अगर वह गुलाबी है, तो वह साफ़ है।

जीभ की जलेबी!

इन वाक्यों को जल्दी-जल्दी छह बार कहो। देखो कैसे तुम्हारी जीभ की जलेबी बन जाएगी!

कच्चा पापड़ पक्का पापड़

चार कचरी कच्चे चाचा, चार कचरी पक्के!

ब्लू ब्लड

बैड ब्लड

ब्लू ब्लड

बैड ब्लड...



श्रेया कसत एक विजुअल डिजाइनर हैं।

कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर-लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

“भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!”

– नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ

“कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।”

– पेपरटाइगर्स

“कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।”

– टाइम आउट

“कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।”

– चार्ल्स लैट्टी, द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग



हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा, 2021

मौलिक लेखन कृति स्वामित्व © डॉ एन कृष्णास्वामी

चित्रांकन कृति स्वामित्व © कथा

स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्य: हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए-3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017

दूरभाष: 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998

ई-मेल: marketing@katha-org

वेबसाइट: www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा। कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।



यह पुस्तकें कथा ने बहुत ध्यान और स्नेह के साथ बनायीं हैं। यह 5 से 12 वर्ष आयु के बच्चों के लिए हैं।

यह हमारे 'UnTextBook Initiative' का हिस्सा हैं। बच्चों को पढ़ने का आनंद आये उसके लिए हम बेहतरीन साहित्य और कला का इस्तेमाल करते हैं।

अपने बच्चों के बिना शब्दों वाली किताबों से 1200 शब्दों वाली कहानियों की यात्रा कराएँ।

इसमें 3500 वर्ष पुराने साहित्य से कहानियाँ और कविताएँ हैं।

अपने बच्चों के साथ इन्हें पढ़ें। उनकी कल्पना को नयी उड़ान दें।

हमारे साथ '300 Million Citizens' Challenge' का हिस्सा बनिए। एक ऐसी दुनिया के निर्माण के लिए जहाँ बच्चे आनंद से पढ़ें और समझें। हमसे जुड़े: 300m@katha-org स्वयंसेवा के लिए: volunteer@katha-org पर हमें लिखें

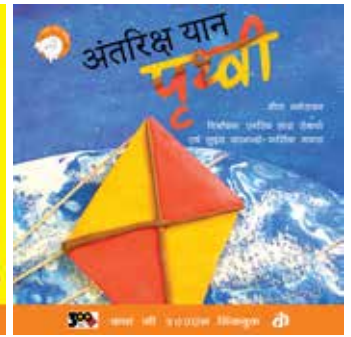
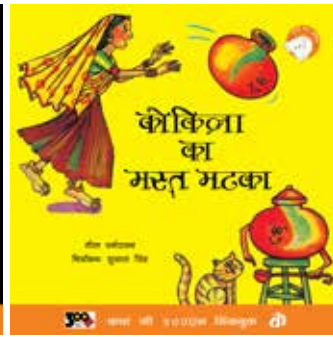
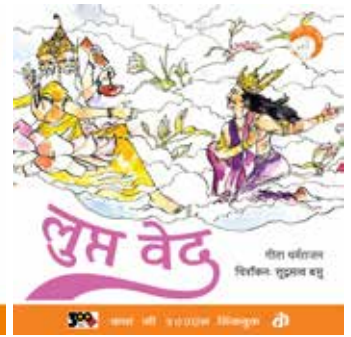
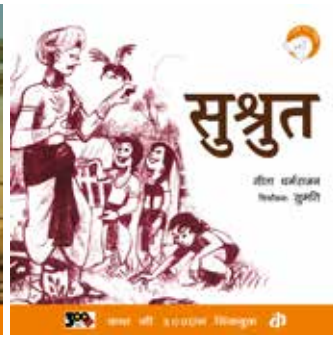
'I Love Reading' Library कथा की एक खास शृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है। यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

पढ़ो
के लिए
समझने
और
आनंद

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं



FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."
— The iconic The Economic Times

a katha book for children

ISBN-978-93-88284-81-3

9 789388 284813

www.katha.org

₹ xxx

इसकी

ऑरिज

श्रृंखला

में